बी.ए पार्ट 1, पेपर 1 (हिंदी साहित्य का इतिहास),

विषय- हिंदी गद्य विधा: संस्मरण, लेक्चर संख्या-29

गेस्ट टीचर- उपासना झा

प्रिय विद्यार्थियों, हिंदी गद्य की विधा में आपने अबतक निबंध और रेखाचित्र के बारे में पढ़ा (लेक्चर 27 एवं 28) आज हम संस्मरण के बारे में जानेंगे।

संस्मरण की परिभाषा

संस्मरण में लेखक जो कुछ स्वयं देखता है और स्वयं अनुभव करता है उसी का चित्रण करता है। लेखक की स्वयं की अनुभूतियाँ तथा संवेदनायें संस्मरण में अन्तर्निहित रहती हैं। स्मृति के आधार पर किसी विषय पर अथवा किसी व्यक्ति पर लिखित आलेख संस्मरण कहलाता है। संस्मरण का सामान्य अर्थ होता है सम्यक् स्मरण। सामान्यतः इसमें चारित्रिक गुणों से युक्त किसी महान व्यक्ति को याद करते हुए उसके परिवेश के साथ उसका प्रभावशाली वर्णन किया जाता है।

डाॅ. गोविन्द त्रिगुणायत के अनुसार, "भावुक कलाकार जब अतीत की अनन्त स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक शैली में अपने व्यक्तित्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रोचक ढंग से यथार्थ रूप से प्रस्तुत कर देता है, तब उसे संस्मरण कहते हैं।"

रेखाचित्र तथा संस्मरण में अंतर

1. रेखाचित्र में आत्मपरकता नहीं होती है इसमें कुछ बची हुई स्मृतियाँ होती हैं। संस्मरण में आत्मपरकता होती है।

2. रेखाचित्र किसी भी काल हो सकता है इसमें ये आवश्यक नहीं कि ये भूतकाल का ही हो। ये वर्तमान का भी हो सकता है। लेकिन संस्मरण अतीत (भूतकाल) का ही होता है।

3. रेखाचित्र में हम सामान्य व्यक्ति के बारे में बताते हैं लेकिन संस्मरण हमेशा किसी प्रसिद्ध व्यक्ति का ही होता है। जिसके बारे में लेखक के जीवन में कहीं न कहीं बहुत महत्व होगा.

4. रेखाचित्र में कल्पना का समावेश हो सकता है लेकिन संस्मरण में व्यक्ति का कभी न कभी होना अनिवार्य है अर्थात इसमें तटस्थता होना अनिवार्य है।

<u>संस्मरण की विशेषतायें</u>

1. **वैयक्तिकता**-

चूँकि संस्मरण में लेखक अपने जीवन के किसी ऐसे प्रसंग, ऐसी घटना को निबद्ध करता है जिसे भूल नहीं पाता और जो समय की पर्याप्त धूल जम जाने के बाद भी ताजी बनी रहती है अतएव इसका पहली महत्वपूर्ण उपकरण तो वैयक्तिकता ही माना जाना चाहिए।

2. **जीवन के खण्ड विशेष का चित्र**-

संस्मरण में लेखक अपने जीवन के किसी प्रसंग, घटना या अपने सम्पर्क में आये हुए व्यक्ति विशेष के किसी महत्वपूर्ण पक्ष की झाँकी प्रस्तुत करता है।

3. **कथात्मकता**-

संस्मरण में अनुस्यूत कथा काल्पनिक न होकर सत्यकथा होती है। परिणामतः यह सहज ही विश्वसनीय होती है। किसी शंका अथवा अविश्वास को यहाँ कोई स्थान नहीं है। यद्यपि इस साहित्य-रूप का ताना-बाना वैयक्तिक जीवन की घटनाओं से बुना जाता है, किन्तु फिर भी ये रचनाएँ पाठक के साथ सहज ही तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित कर लेती है।

4. **प्रमाणिकता**-

संस्मरण में प्रमाणिकता बहुत आवश्यक तत्त्व है। जिन घटनाओं, व्यक्तियों और स्थलों का जिक्र हो रहा है उनसे पाठक का तादात्म्य तभी बैठ सकेगा जब उसे विश्वास होगा कि ये सब कुछ सही और प्रामाणिक है।

<u>उद्भव एवं विकास</u>

बालमुकुंद गुप्त द्वारा सन् 1907 में प्रतापनारायण मिश्र पर लिखे संस्मरण को हिंदी का प्रथम संस्मरण माना जाता है। सरस्वती' में स्वयं महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कई संस्मरण लिखे। उन्होंने अपने साथी लेखकों को नई गद्य विधाओं के लिए प्रेरित भी किया। इस समय के प्रमुख संस्मरण लेखकों में द्विवेदी जी के अतिरिक्त रामकुमार खेमका, काशीप्रसाद जायसवाल और श्यामसुंदर दास हैं। श्यामसुंदर दास ने लाला भगवानदीन पर रोचक संस्मरण लिखे।

संस्मरण को गद्य की विशिष्ट विधा के रूप में स्थापित करने की दिशा में भी पद्म सिंह शर्मा का महत्त्वपूर्ण योगदान माना जाता है। इनके संस्मरण 'प्रबंध मंजरी' और 'पद्म पराग' में संकलित हैं।

महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरणों में अपने जीवन में आए अनमोल पलों को अपने 'पथ के साथी' में संकलित किया है।

प्रकाश चन्द्र गुप्त और इलाचन्द्र जोशी ने भी संस्मरण विधा को पल्लवित करने में अपना योगदान दिया है। वृंदावनलाल वर्मा कृत 'कुछ संस्मरण' इस काल की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

1950 के आस-पास का समय संस्मरण लेखन की दृष्टि से विशेष महत्त्व का है। बनारसीदास चतुर्वेदी को संस्मरण लेखन के क्षेत्र में विशेष सफलता मिली। अपनी कृति 'संस्मरण' में संकलित रचनाओं की शैली पर इनके मानवीय पक्ष की प्रबलता को साफ देखा जा सकता है। इनके संस्मरण रोचकता के लिए विशेष प्रसिद्ध हुए। शैली वर्णनात्मक है और भाषा अत्यंत सरल है।

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर ने अपनी कृतियों 'भूले हुए चेहरे' तथा 'दीप जले शंख बजे' के कारण इस समय के एक अन्य महत्त्वपूर्ण संस्मरण लेखक हैं।

इसी समय उपेंद्रनाथ अश्क का 'मंटो मेरा दुश्मन' प्रकाशित हुआ जिसका साहित्यिक और गैर-साहित्यिक दोनों स्थानों पर भरपूर स्वागत हुआ।

जगदीशचंद्र माथुर ने 'दस तस्वीरें' और 'जिन्होंने जीना जाना' के माध्यम से अपने समय की महत्वपूर्ण संस्मरणात्मक चित्र प्रस्तुत किए।

आलोचक डा. नगेन्द्र ने 'चेतना के बिंब' नाम की कृति के माध्यम से इस विधा को समृद्ध किया। प्रभाकर माचवे, विष्णु प्रभाकर, अज्ञेय और कमलेश्वर इस समय के अन्य प्रमुख संस्मरण लेखक रहे हैं।